

Vol 3 Issue 11 Aug. 2014

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pinte Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....



“आदिवासी जीवन”

काकासाहेब भानुदास घाडगे

हिंदी विभाग प्रमुख, विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला.
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापूर विष्वविद्यालय सोलापूर.

सारांश :

आदिवासी का अर्थ :-

मूल निवासी को आदिवासी कहा जाता है। हरदेव बाहरी ने आदिवासी के लिए ‘आदि-निवासी’ शब्द का प्रयोग किया है। आदिवासी के लिए जनजाति शब्द का भी प्रयोग किया गया है। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए ‘अनुसूचित जनजाति’ शब्द का प्रयोग किया है।

प्रस्तावना :

आदिवासी के कुछ नाम :-

भारत में मुख्य रूप से अनुसूचित जन-जातियों के नाम इस प्रकार है - भील, बैगा, अगरीया, कथौडी, संधाल, गोंड मुंडा, नागा, कुकी, थारू, असूर चकमा, कोळी, पारधी, धनगड, कंदर, कोळी महादेव, थारूआ, बंजारा आदि।

आदिवासियों के निवास :-

भारत में मुख्य रूप से बिहार, त्रिपुरा, मेघालय, असम, उड़ीसा, झारखंड, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, गुजरात, तामिलनाडू, केरल आदि प्रदेशों में आदिवासियों का निवास है।

आदिवासियों की रहन-सहन:-

‘पठार पर कोहरा’, ‘धूणी तपे तीर’, ‘अल्मा कबूतरी’, ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ आदि उपन्यासों में आदिवासियों की रहन सहन का चित्रण हुआ है। इनमें इनके स्वभाव, पहनावा, भोजन आदि का चित्रण हुआ है।

‘पठार पर कोहरा’ उपन्यास में मुंडा आदिवासियों के रहन सहन का चित्रण है ‘धूणी तपे तीर’ उपन्यास में भीलों के रहन सहन का वर्णन हुआ है। भील पुरुष कुर्ता धोती पहनते हैं और सर पर सफेद साफा बाँधते हैं। भील नारियाँ साडी घाघरा पहनती हैं।

‘अल्मा कबूतरी’ उपन्यास की कबूतरा जाति का खान पान पारंपारिक है। कबूतरा अपने खान पान में गेहूँ, बाजरा, मूँग, चना का प्रयोग करता है। साथ ही साथ खरगोस, गाय, बैल का माँस भी खाता है।

‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास के थारू आदिवासी मकई की रोटी, दाल भात बकरे का माँस का प्रयोग अपने खान पान में करते हैं। साथ ही साथ ‘गगन घटा गहरानी’ उपन्यास के आदिवासी चावल, मकई, बाजरे की रोटी आदि खाते हैं।

Title: “आदिवासी जीवन”,

Source: Review of Research [2249-894X] काकासाहेब भानुदास घाडगे yr:2014 | vol:3 | iss:11

आदिवासियों की विशेषताएँ :-

एकता का अभाव :-

आदिवासी में एकता का अभाव रहता है क्योंकि इसमें कई जाति, धर्म, वंश के लोग रहते हैं। अज्ञान, अशिक्षा, निर्धनता आदि के कारण उनमें एकता का अभाव दिखायी देता है।

अंधविश्वास:-

आदिवासी लोग अशिक्षित होने से प्रायः अंधविश्वासी होते हैं। धर्म के आडम्बरो एवं बाह्याचारों पाप-पुण्य में विश्वास रखते हैं। आदिवासी में जादू का अन्यन्य साधारण महत्व है।

“पाँव तले की दूब” उपन्यास में संताल आदिवासी किस्कु जादू पर विश्वास करता है। जादू में बहुत ताकत होती है, इसलिए वह हमेशा अपने साथ जादू विद्या की सामग्री अपने पास रखता था। उसे लगता कि मंत्र तंत्र जादू की ताकत से वन संपदा को बचाया जा सकता है। इसलिए वह सुदृप्त से कहता है –“कोई जरूरत नहीं साहब पिटीशन आन्दोलन का। आप फिकर मत करो। हम उसको मन्त्र से ठीक करेगा। जान गुरु हमको अइसा-अइसा मन्त्र सिखला गया है कि और कपडे की उस थैली से जिसे वह हर वक्त अपने साथ लिये रहता, एक एक चीज निकालकर उसे दिखाने लगा, इ ठो का है? क्या मालूम! बाघ का नाखून। ... और ई ठो? ‘हड्डी!’ मामूली हाड नहीं है।”²

आदिवासी का भूत-प्रेतों पर बड़ा विश्वास होता है। ‘मरंग गोडा नील कंठ हुआ’ उपन्यास में भूत-प्रेत संबंधी विश्वास देखा जा सकता है।

रूढी एवं परंपरा :-

आदिवासी लोग रूढि परंपरा प्रथा का उल्लंघन नहीं करते। रूढी और परंपरा के खिलाप आचरण करना उन्हें पाप लगता है। आदिवासी पुजा अर्चा, व्रत, उपवास, तीर्थयात्रा, कर्मकांड आदि में विश्वास रखते हैं। आदिवासी में धार्मिक अनुष्ठान सादे और सरल होते हैं। बौंगा आदिवासियों में देवता के लिए ‘बौंगा’ शब्द का प्रयोग है। बौंगा को प्रसन्न करने के लिए पुजा अर्चा, बलि, नैवेद्य आदि चढाया जाता है। ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में माता भवानी शीतल भवानी आदि का उल्लेख है। ‘बाजत अनहद ढोल’ उपन्यास में संताली की पूर्वज पुजा की प्रथा है।

अज्ञान एवं अशिक्षा :-

आदिवासियों में अज्ञान एवं अशिक्षा की मात्रा अधिक है। अज्ञान के कारण इनको सहज ठगाया जाता है। अज्ञान के कारण यह लोग कई विमारियों के शिकार बन जाते हैं।

मजबूरी :-

आदिवासी व्यक्ति मजबूर एवं लाचार दिखाई देता है। भूख इस वर्ग की समस्या बन गयी है। पेट के आग को तृप्त करने के लिए आदिवासी नारी कभी कभी पर पुरुष की वासना तृप्त करने के लिए मजबूर होती है।

मानवता की भावना :-

आदिवासी लोगों में मानवता के दर्शन होते हैं। इस वर्ग में वात्सल्य, स्नेह, प्रेम आदि के दर्शन होते हैं। ‘गगन घटा गहरानी’ उपन्यास में आदिवासियों में मानवता की भावना देखने को मिलती है। ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में भी मानवता की भावना आभिव्यक्त हुई है। हिंसा संघर्ष युद्ध से रहित जीवन की कामना की गयी है। जैसे –“युद्ध जहाँ कहीं भी लडा जाता है, मौत और तबाही के सिवा कुछ नहीं लगता। हारनेवालों के लिए भी भय और जीतनेवालों के लिए भी भय। हम अगर खुद सम्मान के साथ जिंदा रहना चाहते हैं तो दूसरों को भी प्यार, सम्मान और जिंदा रहने का हक हमें देना पडेगा। यही जीवन मंत्र है, प्रेम ही खुशबू है और घृणा ही बदबू।”³

नारी शोषण :-

आदिवासी नारी का शोषण आदिवासी और गैर आदिवासी पुरुषोद्वारा होता है । ‘पिछले पन्ने की औरते’, ‘पठार पर कोहरा’, ‘रैत’ आदि उपन्यास में नारी शोषण दिखायी देता है । ‘पिछले पन्ने की औरते’ उपन्यास में बेडिया नारी का सभ्य समाज द्वारा शारिरिक और आर्थिक शोषण किया जाता है । कभी-कभी बेडिया नारी को रखेल के रूप में रखा जाता है ।

युवागृह:-

आदिवासी जीवन में युवागृह को अन्यन्य साधारण महत्व है । युवागृह में युवक और युवतियाँ के विकास का प्रयोग होता है । इनमें सामाजिक न्याय, धार्मिक शिक्षा आदि दी जाती है ।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में मुल निवासी को आदिवासी कहा जाता है । बैगा, भील, बंजारा, संथाल आदि आदिवासी भारत के बिहार, झारखंड, केरल आदि प्रदेशों में निवास करते है । आदिवासी अपने खान पान में गेहूँ, बाजरा, दाल भात आदि का प्रयोग करते है । वे कुर्ता धोती पहनते है और नारियाँ साडी घाघरा आदि पहनती है । आदिवासी में एकता का अभाव दिखाई देता है । आदिवासी प्रायः अंधविश्वासी होते है । पाप-पुण्य में विश्वास रखते है । वे परंपरा, प्रथा आदि का उल्लंघन नहीं करते । परंपरा के खिलाफ कभी आचरण नहीं करते । अज्ञान के कारण उन्हें सहज ठगाया जाता है, वे मजबूर एवं लाचार जीवन व्यतीत करते है । भूख इनकी मुख्य समस्या बन गयी है । आदिवासी लोगों में मानवता के दर्शन होते है । ‘गगन घटा गहरानी’ आदि उपन्यास में मानवता कि भावना दिखायी देती है । आदिवासी नारियोंका आदिवासी और गैर आदिवासी पुरुषोद्वारा शारिरिक और आर्थिक शोषण किया जाता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :-

- १)हरदेव बाहरी - हिंदी शब्दकोश- पृष्ठ ८३
- २)संजीव- पाँव तले की दूब - पृष्ठ ३२
- ३)संजीव- जंगल जहाँ शुरू होता है - पृष्ठ ७२

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net